आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 17 March 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"आईये आज होली के पर्व पर हम अपने पुराने संस्कारों को सदा के लिए विदाई देने का पुरुषार्थ करे "*

होली खुशियों का सन्देश लेकर आ गई है। भारत में तो चारों ओर एक हफ्ते से खुशियाँ ही खुशियाँ फैली रहती है।

भारत देश जहाँ आचार्य ने, नीति निर्धारकों ने ऐसी सुन्दर व्यवस्था की कि लोग कुछ कुछ समय के बाद सबकुछ भूल कर **खुशियाँ** मनाये, आपस में मिले।

सबके मन मुटाव दूर हो गये। तो आज सब **होलिका** दहन करेंगे। लेकिन साथ में अपनी कोई कमी, कोई बूरा संस्कार, कोई बूरी आदत उसका भी दहन कर दे। ताकि जीवन सरल हो जाये।

हमारा लक्ष्य यही रहता है कि हम जीवन को, अपने रिलेशनशिप को एन्जॉय करे। हमारे परिवार में **सुख शान्ति हो**, **प्रेम हो**। सभी लोग सहज सफलता की ओर चले।

लेकिन कभी कभी मनुष्य का कोई एक संस्कार उसे तंग करता है। दूसरों को तंग करता है।

जैसे किसी का **संस्कार** है बूरा बोलने का। उससे लोग तंग हो जाते है। किसी का संस्कार है ज्यादा बोलने का। किसी का संस्कार होता है बहुत फीलिंग में आने का। किसी का संस्कार होता है रोने रूसने का। हमें इन संस्कारों से मुक्त होना है।

तो आज अपने एक कमजोरी डाल दे होली पर और संकल्प करे कि ....

" मुझे सदा सदा के लिए इससे मुक्त हो जाना है "

तो यादगार बन जायेगी जब जब होली आयेगी तब तब याद आयेगा कि ...

" हमने यह चीज़ त्याग कर दी है "

और सभी एक दूसरे पर रंग डालेंगे तो, ज्ञान का रंग। अर्थात ज्ञान दान करना है। एक दुसरे को प्रेम की दृष्टि एक दुसरे को देना है ताकि पिचकारी हम से सब पर पड़ती रहे।

और जो ज्ञानी आत्मा है उन्हें शक्तियों के वायब्रेशन्स सबको देना है। शक्तियों की पिचकारी एक दुसरे पर डालने है। जो राजयोग के द्वारा हम सर्वशक्तिमान से शक्तियाँ लेते है वे एक दुसरे को देने है।

तो हमारा यह रंग सदा के लिए अविनाशी हो जायेगा। यह ऐसा रंग है कि एकबार चढ़ गया तो चढ़ ही जाता है। ऐसे ही रंग की तो जरूरत है।

यह जो राजयोग करते है और जो भगवान के भक्त है, दोनों ही आज प्रभु प्रेम के रंग में रंग जाये। हमें प्रभु प्रेम की रंग में स्वयं को रंग देना है। यह रंग भी कभी उतरता नहीं। दुनिया चाहे कुछ भी कहे कहने दो, लेकिन हमें इस रंग को उतारना नहीं है।

यह रंग चढ़ा रहे तो परमात्मा के संग से आत्मा बहुत श्रेष्ठ और पवित्र हो जायेगी। **मिलन करेंगे, खुशियाँ मनायेंगे, मिठाई खायेंगे।** यह तो बहुत सुन्दर परम्परा है हमारे देश की।

हम सभी **आत्मिक भाव** से आपस में मिलेंगे। अगर पूरे संसार में सबके अंदर ऐसे आत्मिक भाव आ जाये, कि हम भी आत्मा है, दुसरे भी आत्मा है, तो एक सुन्दर आध्यात्मिक लहर चारों ओर फैल सकती है।

और इसमें जो लहर आज काल चारों ओर फैली हुई है, जिससे सार रूप में दुःखों की लहर हो गया है। भय कि लहर, चिन्ताओं की लहर फैले रहा है। हम **आत्मिक भाव** की लहर से इन सभी लहरों को समाप्त कर सकेंगे।

यही एक मार्ग है। किसी के भय को डाक्टर दूर नहीं कर सकते। डाक्टरों के पास ऐसी दवाई नहीं है कि आपको देंगे और आपकी एंग्जाइटी और डर खतम हो जायेगा।

इसके लिए आपको स्वयं ही सशक्त होना पड़ेगा। तो आज कुछ सुन्दर संकल्पों से अपना श्रृंगार करे। जो आत्मा ईश्वरीय महावाक्य सुनते है वो

इनमें से कुछ ऐसे महावाक्य ले ले जो सदा सदा के लिए उनके जीवन को महान बनाने के माध्यम बन जाये।

तो यह **होली** सुखदाई बन जाये। और पास्ट की होलियों को सदा के लिए विदाई देकर अपने जीवन में नये संसार को प्रवेश कराये। नये विचार, नये संस्कारों का निर्माण करे। जो हमें देखकर दुसरे भी महान बनते जायेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org